टेलीविज़न समाचारों का बदलता स्वरुप और उसकी विश्वसनीयता

(न्यूज़ फॉर्मेट्स और न्यूज़ ट्रेंड्स के विशेष संदर्भ में)

जनसंचार विषय में एम.फिल. उपाधि के लिए प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

सत्र : 2012-2013

शोध निर्देशक

प्रो. (डॉ.) अनिल के. राय 'अंकित'

अधिष्ठाता : मानविकी व सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

निदेशक : संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र

ज्ञान शांति मैत्री

शोधार्थी

तृप्ति पाण्डेय

एम. फिल. जनसंचार

नामांकन क्र. - 2012/03/208/004

संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र

(मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ)

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम -1997, क्रमांक – 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल, वर्धा – 442005 (महाराष्ट्र),

आभार

सर्वप्रथम मैं आभार प्रकट करती हूँ महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय का जिसने मुझे यहाँ अध्ययन करने का मौका दिया| इसके बाद मैं अपने मम्मी-पापा और भाई की हृदय से आभारी हूँ, जिनसे हमेशा मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रही और हर परिस्थिति में जिन्होंने मेरा साथ दिया और मुझे प्रोत्साहित किया|

मैं आभारी हूँ, अपने विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक डॉ. अनिल राय 'अंकित' जी की जिनके मार्गदर्शन एवं सहयोग से मैं अपना शोध कार्य पूरा कर पायी| साथ ही मैं आभार प्रकट करती हूँ धरवेश कठरिया सर का जिन्होने शोध विषय चुनने में मेरी मदद की, डॉ. अख्तर आलम सर का जिंहोने समय-समय पर अपना मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन दिया|

इस शोध कार्य को पूरा करने में कुछ ख़ास लोगों का बहुत योगदान रहा, जिनमे से एक हैं अखिलेश दीक्षित सर जिन्होंने हिन्दी अनुवाद में मेरी मदद की| मेरे दोस्त जिनमे मेरी मम्मी-पापा भी शामिल हैं, प्रीति, स्वेतलाना, संदीप बत्रा सर जिन्होंने कई स्थितियों में मेरी मदद की| इसके अलावा मेरे सहपाठी और वर्धा के साथियों को भी मेरा धन्यवाद अपना सहयोग और प्रोत्साहन देने के लिए|

अंत में, मैं आभार व्यक्त करती हूँ, मेरे ख़ास मित्र 'योगेश' का जिनके सहयोग के बिना इस शोध-कार्य को मंज़िल तक पहुंचाना मेरे लिए बहुत मुश्किल था|

अनुक्रमणिका

1. प्रस्तावना एवं शोध पद्धति 1

2. टेलीविजन समाचारों का ऐतिहासिक विकास 15

2.1. टेलीविज़न समाचारों का आरंभ 15

2.2. टेलीविज़न समाचार चैनलों एवं समाचारों का क्रमिक विकास 21

2.3. दूरदर्शन: लेखन, शैली और प्रस्तुतीकरण..28

2.4. निजी टेलीविजन समाचार : लेखन शैली और प्रस्तुतीकरण.....................33

3. टेलीविज़न समाचारों का बदलता स्वरूप : दूरदर्शन से निजी समाचार चैनलों तक 43

3.1. दूरदर्शन पर समाचारों का स्वरूप एवं प्रस्तुतीकरण 43

3.2. निजी समाचार चैनलों के फ्लैक्सिबल न्यूज़ फॉर्मेट 48

3.3. समकालीन समाचार कार्यक्रमों की रूप-रेखा...51

3.4. विभिन्न न्यूज़ फॉर्मेटों पर आधारित कार्यक्रम.....................................55

3.5. विशिष्ट समाचार कार्यक्रम 62

4. टेलीविज़न समाचारों की विश्वसनीयता 65

4.1. प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से...65

4.2. सूचना की दृष्टि से 71

5. आंकड़ों की प्रस्तुति एवं विश्लेषण 79

6. निष्कर्ष एवं सुझाव 104

7. संदर्भ ग्रंथ सूची 112

8. परिशिष्ट..115

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना एवं शोध पद्धति

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना एवं शोध पद्धति

वर्तमान समय को सूचना युग कह कर संबोधित किया जाता है| सूचना के संसार में जनसंचार माध्यम अर्थात मीडिया ही मुख्य भूमिका निभाता है| नब्बे के दशक में भूमंडलीकरण और नई आर्थिक नीतियों के आ जाने से हमारे देश में कई चीज़ें तेज़ी से बदली हैं, जिसमें से एक है देश का सूचना-तंत्र| सूचना विस्फोट भी इसी के अंतर्गत आने वाली घटना है, जिसके द्वारा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मुख्य रूप से प्रभावित हुआ है|

भारत के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और खास तौर से टेलीविज़न का यह आँखों को चौंधियाने वाला युग है| हाल के आंकड़ों के अनुसार, 2012 के अंत तक देश के करीब 14.8 करोड़ घरों में टेलीविज़न पहुँच चुका है और क़रीब 12.6 करोड़ घरों में केबल और सैटेलाइट टीवी ने भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराई है| टेलीविज़न सेट्स के साथ-साथ बात करें टेलीविजन चैनलों की, तो एक आकलन के अनुसार देश में 800 से अधिक टेलीविज़न चैनल हैं, जिनमें न्यूज़ चैनलों की संख्या 100 से अधिक है| कहा जा सकता है कि भारत में टेलीविज़न के इतने व्यापक और बहु-आयामी प्रचार-प्रसार का किसी को अंदाज़ नहीं था| समाचार चैनलों के संदर्भ में देखें तो पिछले डेढ़ दशक में जिस तरह से देश में समाचार चैनलों का स्वरूप बदला है, जो निश्चय ही आश्चर्य कर देने वाला है|

पिछले कुछ सालों में टेलीविज़न की दुनिया में कई तरह के परिवर्तन हुए हैं जैसे- दूरदर्शन का एकाधिकार समाप्त होना, ढेरों टेलीविज़न चैनलों का प्रसारण की दुनिया मे अस्तित्व में आना, नयी-नयी तकनीकों का प्रसारण में प्रयोग होना आदि| समाचार चैनलों के संदर्भ में बात करें तो दूरदर्शन का एकाधिकार समाप्त होते ही दर्शकों को विकल्प के रूप में 24 घंटे प्रसारण करने वाले दर्जनों निजी समाचार चैनल मिल गए| इसके अलावा संचार के क्षेत्र में

आई विभिन्न नयी तकनीकों ने समाचारों को एकत्र करने से लेकर उनके प्रसारण के तौर-तरीके को गहराई से प्रभावित किया| देखा जाए तो इन सभी परिवर्तनों के परिणामस्वरूप, समाचारों का संसार सिर्फ मात्रा के लिहाज़ से नहीं बदला बल्कि कार्यक्रमों के प्रसारण, उनकी गुणवत्ता, उनके कंटेंट से लेकर उनके प्रस्तुतीकरण में भी महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं| वर्तमान परिप्रेक्ष्य में टेलीविज़न पत्रकारिता में आए बदलाव से समाचार-बोध, भाषा, कार्य शैली , तकनीक, प्रस्तुति, समाचार बाज़ार, यह सभी प्रभावित हुए हैं| सूचना-क्रांति ने समाचार प्रस्तुतीकरण के तकनीकी पक्ष को काफ़ी मज़बूत और आधुनिक बना दिया हैं| यह सभी विधाएं समाचार प्रस्तुतीकरण में प्रमुख भूमिका निभाती हैं|

बढ़ते चैनलों और उनके बीच की कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण टेलीविज़न समाचारों के स्वरूप में बड़ा अंतर देखने कों मिला है| कभी दर्शकों कों दूरदर्शन पर महज़ पाँच मिनट का समाचार बुलेटिन देखने कों मिला करता था और अब 24 घंटे समाचार प्रसारित करने वाले निजी समाचार चैनलों कि भीड़ है जो विभिन्न न्यूज़ फॉर्मेटों और ट्रेंड्स के ज़रिए समाचारों कों रोचक ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश में लगे रहते हैं| आज के समाचार कार्यक्रमों कों देखें तो हम पाते हैं कि वे एक जटिल टेलीविज़न पाठ्य की तरह हैं जिसके विभिन्न हिस्से हैं| जैसे न्यूज़ एंकर का सीधे दर्शकों को संबोधित करना, न्यूज़ रिपोर्ताज़, स्टूडियो में विशेषज्ञों और न्यूज़ एंकर की बातचीत या किसी ऐसे स्थल से सीधे रिपोर्टिंग जहाँ घटना घट रही हो आदि| इसके अलावा उनकी नाटकीय या अलग सी विषय धुन जो दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने में अहम भूमिका निभाती है| साथ ही ग्राफ़िक्स, मानचित्र, आंकड़े, चित्र व आकृतियों जैसी तकनीकों का प्रयोग जो समाचारों के प्रस्तुतीकरण कों प्रभावी बनाती हैं| जहां एक तरफ निजी समाचार चैनलों की बढ़ती लोकप्रियता से यह स्पष्ट होता है कि दर्शक समाचारों को नए फॉर्मेटों में देखना चाहते हैं वहीं दूसरी तरफ समाचारों कों अत्यधिक रोचक और मनोरंजक बनाने की कोशिश ने भी समाचारों की विश्वसनीयता पर सवाल उठा दिए हैं| आज यह

आसानी से पाया जाने लगा है कि घटनाओं कों उनके मौलिक रूप में नही बल्कि एक निश्चित व्याख्या के साथ परदे पर प्रस्तुत किया जाता है एवं समाचारों कों विभिन्न न्यूज़ फॉर्मेट्स के अनुसार ढाला जाता है| समाचार कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण की संहिता व चलन के कारण मीडिया विद्वानों का मत है कि समाचारों का स्वरुप उसके कथ्य पर हावी हो जाता है|

टेलीविजन अभी निरंतर विकास की प्रक्रिया में है इसलिए टेलीविज़न का अध्ययन अन्य मीडिया के अध्ययन की तुलना में अपेक्षाकृत नया विषय है| बदलती परिस्थितियां और नई तकनीक, टेलीविजन कार्यक्रमों कों हर स्तर पर प्रभावित करती हैं इसलिए ऐसे कई विषयों पर सवाल-जवाब और शोध की संभावना हमें मिलती है|

प्रस्तावना

हालांकि परिवर्तन पूरे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हुआ है, लेकिन इस शोध में मैंने समाचार चैनलों के प्रस्तुतीकरण और न्यूज़ फॉर्मेट्स में हुए बदलावों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की है, इसी के साथ मैंने दर्शकों के पक्ष कों भी महत्व देते हुये यह जानने का प्रयास किया है कि समाचारों के बदलते स्वरूप से वे कितने संतुष्ट हैं एवं समाचारों का विभिन्न तरीकों से प्रस्तुतीकरण उनकी समाचार चैनलों के प्रति विश्वसनीयता कों कैसे प्रभावित कर रहा है|

इस शोध कार्य को मैंने 6 अध्यायों में विभाजित किया है|

पहला अध्याय : प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि

इस अध्याय में मैंने अपने शोध-विषय एवं शोध प्रविधि का पूर्ण परिचय दिया है जिसके अंतर्गत शोध का उद्देश्य, उपकल्पना, अध्ययन क्षेत्र, शोध का महत्व आदि महत्वपूर्ण बिन्दुओं का उल्लेख किया है|

द्वितीय अध्याय : टेलीविज़न समाचारों का ऐतिहासिक विकास

इस अध्याय में मैंने भारत में टेलीविज़न समाचारों के क्रमिक विकास को दिखलाने की कोशिश की है| एक समय था जब भारत में टेलीविज़न दूरदर्शन के नाम से ही जाना जाता है और लोगों के पास दूरदर्शन के समयबद्ध समाचार बुलेटिनों कों देखने के अलावा कोई विकल्प नहीं हुआ करता था, इस अध्याय में मैंने उस समय से लेकर वर्तमान समय में टेलीविज़न समाचारों के स्वरूप में आए बदलाव कों अंकित किया है| दूरदर्शन और निजी समाचार चैनलों के समाचार लेखन, शैली और प्रस्तुतीकरण का विवरण भी दिया है|

तृतीय अध्याय : समाचारों का बदलता स्वरूप : दूरदर्शन से निजी समाचार चैनलों तक

शोध के विषय का आधार है इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में समाचारों के प्रस्तुतीकरण में आए बदलाव| भारतीय टेलीविज़न समाचारों में कितना और कैसा बदलाव आया है इसका मूल्यांकन करने के लिए मैंने दूरदर्शन के पारंपरिक फॉर्मेट पर चलने वाले समाचार चैनल 'डीडी न्यूज़' और विभिन्न लोकप्रिय निजी राष्ट्रीय समाचार चैनलों के न्यूज़ फॉर्मेट्स का तुलनात्मक अध्ययन किया है| इस अध्याय में संक्षेप में इस पूरे परिवर्तन पर नज़र डालने की कोशिश की गई है|

चतुर्थ अध्याय : टेलीविज़न समाचारों की विश्वसनीयता

इस अध्याय में मैंने यह रेखांकित करने का प्रयास किया है कि नए-नए न्यूज़ फॉर्मेट्स एवं ट्रेंड्स, समाचारों की विश्वसनीयता एवं मौलिकता को बनाए रखने में कैसे योगदान कर रहे हैं| इस अध्याय के अंतर्गत टेलीविज़न समाचारों की विश्वसनीयता का दो आधारों पर विश्लेषण किया गया है: 1) प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से 2) सूचना की दृष्टि से

पंचम अध्याय : आंकड़ों की प्रस्तुति एवं विश्लेषण

दर्शकों की टेलीविज़न समाचारों के बदलते स्वरूप और उनके प्रस्तुतीकरण के प्रति संतुष्टि और विश्वसनीयता को मापने के लिए मैंने प्रश्नावली के माध्यम से लोगों की राय जानने की कोशिश करी| आंकड़ों के संकलन के लिए लोगों को तीन आयु वर्ग में विभाजित कर उनसे उनकी रुचि, पसंद-नापसंद जानने की कोशिश की है, जिससे पता चलता है कि आजकल के समाचार चैनलों से दर्शक कितने संतुष्ट हैं|

छठा अध्याय : निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्याय में शोध-विषय पर गहन कार्य करने के बाद निकाले गए निष्कर्ष एवं सुझावों को सम्मिलित किया है|

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध में मैंने टेलीविज़न समाचार चैनलों को शोध के क्षेत्र के रूप में चुना है| समाचार चैनलों में प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के बदलते स्वरूप, रूप-रंग एवं प्रस्तुतीकरण को केंद्र में रखकर यह शोध कार्य किया गया है| इसमें केवल कार्यक्रमों को ही नहीं बल्कि समाचारों के प्रस्तुतीकरण को प्रभावित करने वाले अन्य तत्व जैसे – ग्राफिक्स, एनिमेशन, रंग, ध्वनि, एंकर की भूमिका एवं योगदान को भी शामिल किया गया है| कार्यक्रमों का विश्लेषण विशेष 'टाइम-बैंड' में आ रहे कार्यक्रमों का अवलोकन करके किया गया है| प्रस्तुत शोध-विषय का एक मुख्य भाग दर्शकों की विभिन्न न्यूज़ फॉर्मेटों एवं ट्रेंड्स के प्रति संतुष्टि और विश्वसनीयता का आकलन करना भी है, जिसके लिए मैंने निदर्शन पद्धति द्वारा दर्शकों को आयु वर्ग में विभाजित कर उनकी समाचारों के प्रति विश्वसनीयता और पसंद-नापसंद के अध्ययन का प्रयत्न भी किया है|

शोध का उद्देश्य

इस विषय के सारगर्भित अध्ययन के उद्देश्य से निम्नलिखित बिन्दुओं पर अध्ययन आवश्यक है :-

1. भारत में टेलीविजन समाचारों के आगमन से लेकर टेलीविज़न की वर्तमान स्थिति का अध्ययन| चूंकि यह विषय समाचार चैनलों के प्रस्तुतीकरण पर आधारित है, इसलिए समाचार चैनलों के शुरुआती दौर से लेकर अब तक, समाचार कार्यक्रमों के फॉर्मेट्स और ट्रेंड्स में आए बदलावों का अध्ययन इस शोध कार्य का एक मुख्य उद्देश्य है|
2. भूमंडलीकरण के बाद से भारत में टेलीविज़न समाचारों के जगत में मात्रात्मक और गुणात्मक परिवर्तनों को क्रमिक रूप में संक्षिप्त में प्रस्तुत किया गया है|
3. वर्तमान में प्रचलित न्यूज़ फॉर्मेट्स और ट्रेंड्स का विश्लेषण|
4. विभिन्न आयु समूह के दर्शकों की बदलते न्यूज़ फॉर्मेटस के बारे में प्रतिक्रिया जानने का प्रयत्न|
5. दर्शकों की समाचारों के नए-नए स्वरूपों के प्रति विश्वसनीयता का आकलन किया गया|
6. साथ ही दर्शकों की टेलीविज़न समाचार चैनलों से क्या अपेक्षाएं हैं, यह जानने का प्रयत्न किया गया है|

उपकल्पना

प्रस्तुत विषय पर मेरी शोध उपकल्पना निम्नांकित हैं :-

1. सभी निजी समाचार चैनलों द्वारा एक जैसे न्यूज़ फॉर्मेट्स में समाचारों को प्रस्तुत किया जा रहा है|
2. निजी समाचार चैनलों द्वारा प्रयोग किए जा रहे विभिन्न न्यूज़ फॉर्मेट, समाचारों के मनोरंजनीकरण करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं|
3. आज समाचार कार्यक्रमों में राजनीतिक, खेल, अपराध, फिल्म और मनोरंजन जगत की ख़बरों को विशेष स्थान दिया जा रहा है|
4. प्राइम टाइम बेंड में स्पीड न्यूज़/ बुलेट न्यूज़ जैसे कार्यक्रमों के प्रसारण को वरीयता दी जा रही है|
5. समाचार प्रस्तुतीकरण में न्यूज़ एंकर्स, ग्राफिक्स, ध्वनि इन सब को लेकर किए जा रहे प्रयोग दर्शकों को आकर्षित करने में समर्थ हो रहे हैं|
6. आज समाचारों में चटपटी ख़बरों को, प्रमाणिक सामग्री के स्थान पर, TRP के लिहाज़ से वरीयता मिल रही है|
7. दर्शकों में वर्तमान न्यूज़ फोर्मट्स के प्रति असंतुष्टि है, साथ ही उनकी समाचारों के प्रति विश्वसनीयता में भी कमी आई है|

साहित्य पुनरावलोकन

जब हम कोई शोध करते हैं तो आवश्यक होता है कि उस विषय से संबंधित साहित्य का अध्ययन किया जाए| इस अध्ययन के ज़रिये हमे ज़रूरी जानकारी तो मिलती ही है साथ ही यह भी पता चलता कि इस विषय पर अब तक कितना कार्य हो चुका है और हमारा शोध इनसे किस प्रकार भिन्न है| साहित्य पुनरावलोकन के ज़रिये यह भी जानने का प्रयास किया जाता है कि हम अपने शोध में क्या नया कर सकते हैं| इन सारी जानकारियों के लिए मैंने जो अध्ययन किया है वह इस प्रकार है :–

1. *भारतीय इलेक्ट्रोनिक मीडिया, डॉ.देवव्रत सिंह, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली*

   इस पुस्तक ने इलेक्ट्रोनिक मीडिया की सभी शाखाओं जैसे रेडियो , टेलीविजन , केबल टीवी , वेब मीडिया सभी शाखाओं के तथ्यों, घटनाओ, व्यक्तियों और वैचारिक मसलों को संतुलित एवं क्रमबद्ध रूप में संजोया गया है|

2. *इलेक्ट्रोनिक मीडिया, डॉ. संजीव भानावत , जन संचार केंद्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर*

   इस पुस्तक में इलेक्ट्रोनिक मीडिया के सभी माध्यमों के इतिहास, सभी माध्यमों की लेखन शिल्प एवं प्रस्तुति, प्रोडक्शन तकनीक एवं माध्यम की पूरी अद्यतन जानकारी दी है|

3. *पत्रकारिता (कल, आज और कल), संतोष कुमार, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली*

   यह पुस्तक मीडिया के उद्भव से आज तक के विकास के सफ़र को खुद में समाये हुए है, जिसमें मैंने खास तौर पर इलेक्ट्रोनिक मीडिया के संदर्भ में दी गयी जानकारी का अध्ययन किया है|

4. *मीडिया और समाज, लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा)*

मीडिया ट्रेंड्स से जुड़े अनेक प्रश्नों पर इस पुस्तक में विचार किया गया है| इन विचारों के उदाहरण इसी समाज और इसी समय से लिए गए हैं| कई समकालीन विषयों का मीडिया शास्त्र के दृष्टिकोण से विश्लेषण इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है|

5. *मीडिया और बाजारवाद, रामशरण जोशी, राधाकृष्ण प्रकाशन*

मीडिया बाजारवाद के विमर्श को पुस्तक का आकर दिया गया है| इस विषय पर एक राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित किया गया था और उसी विचार मंथन को इस पुस्तक में आर्टीकल्स के रूप में दिया गया है|

6. *टेलीविज़न की कहानी, डॉ.श्याम कश्यप, राजकमल प्रकाशन*

टेलीविज़न के विभिन्न आयामों का समावेश करती इस पुस्तक में कुल बारह अध्याय हैं, जिसमें टेलीविजन के आविष्कार और उसके क्रमिक विकास की कहानी के साथ उनकी विशिष्ट आंतरिक संरचना, चरित्र और सामाजिक प्रभावों का भी प्रभावी रूप में अध्ययन किया गया है|

7. *ख़बरेंविस्तार से, डॉ.श्याम कश्यप, राजकमल प्रकाशन*

इस पुस्तक में टीवी पत्रकारिता की पढाई के लिए आवश्यक तकनीकी एवं प्रायोगिक ज्ञान की सामग्री के साथ-साथ भारत में टेलीविज़न का दूरदर्शन से लेकर निजी समाचार चैनलों तक के सफर के हर पहलू को बारीकी से दिखलाया गया है|

8. *दूरदर्शन - विकास से बाज़ार तक, सुधीश पचौरी,प्रवीण प्रकाशन*

यह पुस्तक दूरदर्शन की सैंतीस वर्षों की यात्रा को खुद मे समेटती है| प्रस्तुत पुस्तक पिछले पाँच वर्षों में दूरदर्शन के 'विकास' से 'बाज़ार' की ओर आने की समीक्षा है|

9. *ब्रेकिंग न्यूज़, पुण्य प्रसून वाजपेयी, वाणी प्रकाशन*

यह पुस्तक टेलीविज़न के जाने-माने पत्रकार पुण्य प्रसून वाजपेयी ने इलेक्ट्रोनिक मीडिया में अपने कई वर्षों के अनुभव को बताते हुये लिखी है|

10. *लेख: "Booming: Television News Channels in India",* - देवीप्रसाद महापात्रा,

11. *लेख: "Striving for credibility: news and current affairs",* by Norbert Wildermuth,

12. *www.indiantelevision.com*

13. *www.newslaundary.com*

14. *www.thehoot.org*

15. *www.mediakhabar.com*

16. *मैगेज़ीन: मीडिया विमर्श, मीडिया मीमांसा, जन मीडिया आदि*

शोध प्रविधि

मैंने अपने शोध विषय "टेलीविज़न समाचारों का बदलता स्वरूप और उसकी विश्वसनीयता" (न्यूज़ फॉर्मेट्स और न्यूज़ ट्रेंड्स के विशेष संदर्भ में) का वैज्ञानिक व तार्किक अध्ययन हेतु निम्न पद्धतियों एवं प्रणालियों का प्रयोग किया है, परंतु उससे पहले मैं संक्षिप्त में 'शोध' का परिचय देना चाहूंगी

शोध क्या है ?

शोध शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए रैडमैन और मोरी ने लिखा है – *"नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए किए गए व्यवस्थित प्रयत्न को हम शोध कहते हैं|"* दूसरे शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक पद्यति या वैज्ञानिक प्रणाली द्वारा सत्य कि खोज करना, प्राप्त ज्ञान की परीक्षा करना या ज्ञान प्राप्त करने का निरंतर प्रयास करना ही शोध है|

इस शोध विषय में गुणात्मक एवं परिणामात्मक दोनों ही तरह का डाटा प्राप्त करने हेतु निम्नलिखित शोध पद्धतियों एवं प्रणाली का प्रयोग किया गया है|

1. निदर्शन पद्धति

निदर्शन समग्र का एक छोटा भाग या अंश होता है जोकि समग्र का प्रतिनिधित्व करता है तथा जिसमें समग्र की मौलिक विशेषताएँ पाई जाती हैं| तथ्यों के संकलन के लिए मैंने अपने शोध कार्य में सरल देव निदर्शन विधि (random sampling) का प्रयोग करते हुए अपने अध्ययन क्षेत्र के लोगों को तीन आयु-वर्गों में विभाजित किया – 18 से 25, 26 से 45 और 45 से अधिक|

2. अवलोकन पद्धति

अवलोकन, शोध की एक ऐसी प्रविधि है जिसका प्रयोग सामाजिक व्यवहार, घटनाओं एवं परिस्थितियों के अध्ययन के लिए किया जाता है जिन्हें हम अपनी आँखों से देख सकते हैं|

यह घटनाओं तथा व्यवहार का स्वाभाविक रूप से अध्ययन है जिसमें निरीक्षणकर्ता सुनियोजित तथा व्यवस्थित रूप में स्वयं घटनाओं एवं व्यवहार का निरीक्षण करके उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करता है| यह एक विश्वसनीय प्रविधि मानी जाती है क्योंकि इसमें प्रत्यक्ष रूप से देखकर ही विश्वास किया जाता है|

अपने इस शोध कार्य में मैंने अवलोकन पद्धति का प्रयोग करते हुए, टेलीविज़न समाचारों के स्वरूप, प्रस्तुतीकरण, न्यूज़ फॉर्मेट एवं ट्रेंड्स का निरीक्षण किया है एवं उससे संबंधित बातों को लेखबद्ध करने का प्रयत्न किया है|

3. साक्षात्कार

तथ्य संकलन के लिए इस प्रविधि का प्रयोग समाज शास्त्र में अधिक किया जाता है| साक्षात्कार प्रविधि के द्वारा हम सूचनादाता के सामने बैठकर वार्तालाप के द्वारा अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त करते हैं| यह एक सर्वाधिक प्रचलित प्रविधि मानी जाती है जिसका प्रयोग मैंने भी इस शोध कार्य में किया है| दूरदर्शन एवं निजी समाचार चैनलों की कार्य शैली और विभिन्न पहलुओं को व्यावहारिक रूप से समझने के लिए मैंने दूरदर्शन एवं निजी समाचार चैनल के उच्च अधिकारियों का साक्षात्कार किया एवं ज़रूरी जानकारी प्राप्त की|

4. अंतर्वस्तु विश्लेषण

इस पद्धति के अंतर्गत मैंने दूरदर्शन के राष्ट्रीय समाचार चैनल ‘डीडी न्यूज़’ और कुछ लोकप्रिय निजी समाचार चैनलों के समाचार कार्यक्रमों का अंतर्वस्तु विश्लेषण एवं तुलनात्मक अध्ययन किया है, जिससे मुझे टेलीविज़न समाचारों के बदलते स्वरूप एवं प्रस्तुतीकरण के विश्लेषण में आसानी हुई|

शोध प्रणाली

इस शोध का दूसरा मुख्य भाग, वर्तमान समय में दर्शकों की टेलीविज़न समाचारों के प्रति विश्वसनीयता का आकलन करना भी है| दर्शकों से टेलीविज़न समाचारों के बदलते स्वरूपों एवं विश्वसनीयता को लेकर जानकारी प्राप्त करने के लिए मैंने प्रश्नावली प्रणाली का उपयोग करते हुए तथ्यों एवं आंकड़ों का संकलन किया है|

उपरोक्त शोध पद्धति का उपयोग करते हुए मैंने अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाया।